IJAER/Feb-March 2013/Volume-2/Issue-2/Article No-14/ 415-418 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

जवाहर लाल नेहरू जी के विचारों का भारतीय राजनीति में योगदान

Dr. Anup Pradhan
Department of Poltical Science
SunRise University,Alwar
Rajasthan

सर:
जवाहर लाल नेहरू जी के विचारों पर वैज्ञानिक एवं प्राविधिक क्रान्ति, मानवतावाद, धर्मनिरपेक्षता, उदारवाद, फेबियनवाद तथा मार्क्सवाद का स्पष्ट प्रभाव था। वे आर्थिक नियोजन एवं लोकतन्त्रवाद दोनों के मध्य समन्वय स्थापित करना चाहते थे। आलोचकों ने उन्हें शायद इसी कारण से "हेमलेट आफ इण्डिया" कह कर सम्बोधित किया है किन्तु यह सत्य है कि लोकतन्त्र को यथावत् बनाये रखने तथा आर्थिक नियोजन के रूसी उदाहरण का भारतीयकरण करने में नेहरू ने जो वैचारिक एवं व्यावहारिक सफलता प्राप्त की वह विश्व में अनूठी थी। स्वतन्त्रता तथा समानता के व्यक्तिगत मूल्यों का संधारण करने के साथ–साथ नेहरू ने सोवियत रूस के असमान सामूहिकता के स्थान पर सहकारिता का वरण किया। वे समस्त वैयक्तिक स्वतन्त्रता के मध्य आर्थिक समृद्धि का समाजवादी क्रम लाना चाहते थे। उनका दृष्टिकोण सार्वभौम मानववादी था। वे उन मूल्यों को भारतीय जन–जीवन में उतारना चाहते थे जो कि पाश्चात्य जीवन के प्राण थे। संसदात्मक लोकतंत्र को भारत में प्रतिष्ठित करने का उनका प्रयास सराहनीय था। वे भारत जैसे निर्धन, अल्पशिक्षित एवं अल्पविकसित देश में पश्चिम की अति–विकसित शासन पद्धतियों का प्रयोग करना चाहते थे ताकि वर्षों से चली आ रही जड़ता अज्ञानता एवं सामाजिक अंधविश्वासिता को दूर किया जा सके। नेहरू ने राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता तथा राजनीतिक समानता के आदर्शों को सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया।

प्रस्तावना:
गांधी युग के महान नेता जवाहर लाल नेहरू भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के वीरों में केवल गांधी से ही कम थे। वास्तव में गांधीजी के अतिरिक्त केवल जवाहरलाल नेहरू ही ऐसे व्यक्ति थे जिनका जीवन भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात पण्डित नेहरू भारती राजनीतिक रंगमंच पर ऐसे छा गए कि भारत नेहरू था और नेहरू भारत था। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में देशवासियों ने इन्हें 17 वर्ष तक अपरिमित समर्थन दिया। वह राष्ट्रीय जीवन के अनेक क्षेत्रों में गतिदर्शक थे। उनका विशेष बल धर्मनिरपोत, समाजवाद और प्रजातन्त्रवाद पर था और ये आप हमारे भारत में गहरे जड़ पकड़ गये हैं और भारत के आदर्श हैं। स्वतन्त्रता संग्राम के विशेष सेनानी नेहरू ने लोगों का दिल जीत लिया और वह जीवन पर्यन्त उनके स्नेह और श्रद्धा के पात्र बने रहे। सम्भवता, उनका सबसे बड़ा दोष अनिश्चितता थी। इन दोनों से सम्बन्धित एक और दोष था उनका दबाव में आकर झुक जाना। यह तो स्वतन्त्रता से पहले भी तय था। जब नेहरू, गांधी और दक्षिण पन्थियों के आगे झुक जाया करते थे। स्वतन्त्रता के पश्चात भी यह सत्य है। नेहरू को लोगों की पहचान कम थी। उन्हें प्राचीन राजभक्ति और पूर्व सेवाओं का भी ध्यान रहता है जिसके फलस्वरूप वह उनको सरकार और दल के ऊँचे पदों पर बनाए रखते हैं यद्यपि अब वह उसके पात्र नहीं हैं। व्यक्तिगत भक्ति उन्हें ठीक–ठीक मूल्योंकन से अधिक प्रिय थी। परन्तु ये दोष महापुरूषों के दोष है और नेहरू एक मनुष्य के रूप में और राजनीतिज्ञ के रूप में महापुरूष हैं। यदि महानता घटनाओं के दिशा निर्देशन से मापी जाती है अथवा लहरों के सिरों से ऊपर उठने में ही जनता के मार्गदर्शन में ही और प्रगति के लिए उत्प्रेरक बनने में है तो निश्चित ही नेहरू उस महानता के अधिकारी हैं। एस॰गोपाल के शब्दों में–"बीसवीं शतब्दी के इतिहास में नेहरू ने भारतीयों के नेता के रूप में और अन्तर्राष्ट्रीश्य आत्मा के प्रवक्ता के रूप में एक निर्णायक भूमिका निभाई है।

नेहरू एक व्यक्तित्व के रूप में:
भारत एक कुँआरी लड़की के समान हो चुका है जिसकी पवित्रता को पुनः हांसिल करने के लिए अथक प्रयासों की जरूरत है। जबकि निर्दयी संसार न केवल इसे लूटने व खसोटने की नज़र से देखा। नेहरू ने 1938 में एक सवाल के जवाब में कहा, "मैं किसी के साथ शर्त नहीं लगाना चाहता, मैं गुस्सा महसूस करता हूँ जब लोगों को

पुशओं व मानवता के प्रति दुर्व्यवहार करते हुए पाता हूँ। लेकिन इन सबसे ज्यादा घृणा उस व्यक्ति से करता हूँ जो भगवान के नाम पर सार्वजनिक वस्तु 'सच' को बदनाम कर देता है। साथ ही जो स्वयं के बनाये हुए घर को बर्बाद कर देता है। इन्हीं सभी कथनों तथा वक्तव्यों को देखते हुए अब यारवदा जेल में गांधी जी को एक पत्र के जवाब में लिखा कि आप मेरे लिए ये स्वार्थी तत्वों को छोड़ दें, मैं न तो राजा हूँ और न ही राजकुमार जिसे शाही अन्दाज के सिवाय और कुछ अच्छा नहीं लगता बल्कि मैं तो एक जनसेवक हूँ जिसे आपकी कुटिया में जगह मिल जाये तो वही जीवन का सबसे बड़ा स्वर्ग होाग। हमें भगवान ने जो गुण प्रदान किये हैं उन्हें नये तरीकों से किस प्रकार लागू किया जाय, तथा किस प्रकार उन्हें ऊँचे आकार की ओर करके, तथा किस प्रकार उन्हें ऊँचे आकार की ओर करके, सही मार्ग अपनाकर अपने अधिकारों की सुरक्षा की जाय।

निम्न सिद्धान्त आधुनिकता और विकास पर बनाये गये जैसा कि प्रो॰ रजनी कोठारी ने नेहरू के सिद्धान्तों के सन्दर्भ में कहा राज्य और राष्ट्र का अध्ययन आर्थिक मापदण्डों के आधार पर करना होता है अन्यथा समाज का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। कोनर ने नेहरू के सिद्धानें को राष्ट्र निर्माणी कहा साथ ही नेहरू का सामाजिक आन्दोलन इस बात पर आधारित था कि राष्ट्रीय आय तेजी से बढ़नी चाहिए इस सिद्धान्त के लिए वह कीन्स से काफी प्रभावित थे! उन्होंने कहा कुल राष्ट्रीय आय को बढ़ाने के लिए उपभोग निवेश सार्वजनिक व्यय तथा बढ़ते हुए नियति होने चाहिए। उन्होंने कहा कि राष्ट्र निर्माण को बहादुर लोगों को जोखिम लेना चाहिए, अच्छे भारत के भविष्य के साहसी लोगों को जोखिम में पागल होना चाहिए! नेहरू एक इतिहासवादी वकील विद्वान, राजनेता, आदर्श पुरूष तथा प्रजातन्त्र को सफल बनाने में उनमें किसी भी एक गुण की कमी नहीं थी। 1950 में योजना निर्माण करते समय उन्होंने रूस वादी पद्धति को अपनाया। उन्होंने कहा हम निश्चय ही प्रजातान्त्रिक प्रक्रिया को अपनाना चाहते हैं हमने इसे क्यों स्वीकार किया इसलिए क्योंकि इसमें विभिन्नताओं के अनेक कारण हैं। हम सोचते हैं कि मानवीय क्रियाओं में वृद्धि समाज के विकास को प्रेरित करती है क्योंकि ऐसा हमने अपने संविधान में हैं। हम व्यक्तिगत आजादी की भावनाओं से जुड़े हैं क्योंकि हम मानव विकास की सहासिक भावनाओं को प्रेरित करने के लिए हैं संसार में उत्पादित भौतिक वस्तु केवल हमारे अनेक युगों में मानव विकास रणनीति को तय करने में अनेक प्रकार की समस्यायें आयी हैं।

उन्होंने खुद को समाजवादी और गणतन्त्रवादी बताते हुए कहा मैं राजशाही में विश्वास नहीं करता। राजकुमारों की तरह आदेश नहीं देता जो राज उद्योगों को जन्म देते हैं जो शक्ति की महानता बताते हुए लोगों के भाग्य पर जीवित रहते हैं। किन्तु हमें समाजवाद दर्शन को अपनाना चाहिए साथ ही सारे संसार के ढांचे को बदल देना चाहिए। भारत अपने रास्ते पर तभी विकसित हो सकता है जब प्रत्येक व्यक्ति समाज में इन तथ्यों को सोचे कि समाज ने उन्हें क्या दिया है साथ ही वह समाज के लिए क्या करें उन्होंने पुनः कहा पूँजीवाद निश्चित रूप से षडयंत्रकारी है। जिसमें एक मनुष्य दूसरे मनुष्यों को एक समूह में दूसरे समूह की तथा एक देश दूसरे देश को लूटता है। यदि हम इस तरह के शोषण को रोकते हैं तो हमें पूँजीवाद को पीछे धकेलना होगा जो केवल समाजवाद से ही सम्भव हैं उन्होंने कहा कि मैं नहीं सोचता कि समाजवाद के अन्दर ही व्यक्ति उतना स्वतन्त्र है इसमें आने वाले समय में वर्तमान से कहीं लाभ है।

नेहरू एवं ग्रामीण विकास:

भारत गाँव में रहता है। एक बार महात्मा गांधी ने कहा था यदि गाँव नष्ट हो जाऐंगे तो भारत भी नष्ट हो जाएगा उन्होंने भारत के कृषि के विकास के सम्बन्ध में कहा कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। दूसरा वर्णन वैदिक युग में भी था ऋगवेद में इसे ग्रामीणी कहा गया। 1901 में कृषि में भारत की राष्ट्रीय आय में बहुत बड़ा योगदान प्रदान कर रही थी। 89 प्रतिशत जनसंख्या कृषि क्षेत्र में लगी हुई थी यह 1951 में 83 प्रतिशत थी जबकि 1981 में 76 प्रतिशत थी जबकि 1991 में यह 74.3 प्रतिशत थी। भारत के विकास के लिए मातृात्मक तथा गुणात्मक दोनों ही कथन महत्त्वपूर्ण हैं। गरीबी उन्मूलन के लिए सामाजिक असमानता को दूर करने के लिए साथ ही गरीबी में ठोकर मारने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में बदलाव आवश्यक है। विकास के लिए तीन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्व हैं (1) जीवन बीमा, (2) आत्म सम्मान, (3) आजादी जबकि आर्थिक वृद्धि विकास के लिए एक आवश्यक तत्व हैं। डा॰ करतार सिंह तथा ग्रामीण विकास संस्था के प्रोफेसर आनंद ने विकास के लिए तीन उद्देश्य (1) जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए भोजन, कपड़े, मकान, अच्छा स्वास्थ्य और सुरक्षा बहुत जरूरी है। (2) जीवन स्तर उठाने के लिए जिसमें अधिक क्रय शक्ति, समता रोजगार के अधिक अवसर, अच्छी शिक्षा तथा सांस्कृतिक व मानववादी

मूल्य इस विचारधारा को अधिक ऊँचा उठा सकते हैं। (3) व्यक्तियों के लिए आर्थिक व सामाजिक उत्थान के लिए विकास अति आवश्यक है।

नेहरू के विचार विश्व बैंक की नीतियों से मिलते जुलते थे। जिसमें कहा गया था किसी भी देश का विकास मानव संसाधन के सोचने समझने की शक्ति पर निर्भर करता है। यद्यपि नेहरू एक दुलर्भ व्यक्तित्व के व्यक्ति थे जो कार्य कुशलता, आदर्शवाद और वास्तविकता को अधिक पसन्द करते थे। नेहरू राष्ट्रीय आजादी के लिए कए लड़ाकू विमान थे जिनके विचारों में कार्य में सभाओं में राष्ट्रवादिता कूट–कूट भरी हुई थी। वह आज भी संसार में प्रजातान्त्रिक नेता के रूप में जाने जाते हैं। वह अपनी मृत्यु तक अपने प्रधानमन्त्री शासन काल में राष्ट्र की सेवा करते रहे यह केवल नेहरू व सुभाष चन्द्र बोस के अथक प्रयास ही थे जिसमें नेहरू को अपने सपने साकार करने का मौका मिला।

ग्रामीण औद्योगीकरण:
नेहरू ने उद्योग धन्धों के विकास के लिए कृषि के विकास को प्राथमिकता दी, लोकसभा में एक प्रश्न का जवाब देते हुए उन्होंने कहा "यद्यपि हम कृषि विकास से अधिक जुड़े हुए हैं, हमें महसूस है कि कृषि अकेले हमारी समस्या का समाधान नहीं कर सकती, इसके बडप्पन के लिए उद्योग धन्धों को भी आगे आना होगा, भारी उद्योग विकास के आधार स्तम्भ हैं। भारत में कुटीर उद्योगों को विनिर्माण की जरूरत है। जिसके माध्यम से रोजगार के अवसर माँग में वृद्धि साथ ही शुद्ध सकल उत्पाद में वृद्धि होगी जो भारत को एक उभरते हुए देश की श्रेणी में खड़ा कर सकेगा।

नेहरू व विदेश नीति:
नेहरू विदेश नीति निर्धारित करने के एक बहुत तीव्र प्रणेता थे। जब भारत ने आजादी प्राप्त की तो संसार दो भागों में बँट गया था साथ ही 'शीत युद्ध' शुरू हो गया था। देश अविकसित था साथ ही इसे औद्योगिक प्रमुख देशों की आवश्यकता थी, गलाकाट प्रतियोगिता किसी भी देश को आगे बढ़ने अथवा नये देश के निर्माण में सहयोग करने को तैयार नहीं थी। शान्ति के लिए संघर्ष व प्रमुख देशी सिद्धान्तों का प्रतिपादन विदेश नीति के मुख्य केन्द्र बिन्दु थे। नेहरू ने, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, व्यापार विस्तार विनिमय के विचार, सूचना विज्ञान आदि से सम्बन्धित नीतियाँ निर्धारित की। इन सभी तथ्यों ने नेहरू को विदेश नीति निर्धारण करने का प्रणेता बना दिया। इन विचारों ने आजादी, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की भावना, पूर्णता प्राप्त करने के विचार साथ इन नियम सिद्धान्तों को किस तरह से लागू किया जाय, उनकी नीति व सिद्धान्तों के प्रमुख आधार थे।

लोकतन्त्र की अवधारणा:
नेहरू जी का विश्वास था कि लोकतन्त्र एक स्थायी अवधारणा नहीं है, अपितु वह एक गतिशील विचार है जिसने समय और परिस्थितियों के अनुकूल नवीन मान्यताओं को अपने में आत्मसात् किया है। उनका कहना था कि लोकतन्त्र की प्रचलित अवधारणा अपर्याप्त है और इसलिए उसे परिवर्तित करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि उसके बिना जनसाधारण विशेषतः गरीबों के हितों की रक्षा नहीं हो सकती तथा उन्हें विकास के उन अवसरों को उपलब्ध नहीं कराया जा सकता जिनसे वे लम्बे समय से वंचित हैं। उनकी मान्यता है कि यदि लोकतन्त्र व्यक्तियों के बीच राजनीतिक असमानताओं को मिटाने का दार्शनिक आधार प्रस्तुत नहीं करता तथा आर्थिक एवं सामाजिक असमानताओं का अन्त करने की प्रेरणा भी देने में असमर्थ रहता है तो वह निष्प्रयोजन है। अपनी इस आस्था को व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा है–'यूरोप में हम देखते हैं कि बहुत से देश समाजवाद की राह पर प्रगति कर रहे हैं। मैं साम्यवादी देशों के विषय में नहीं कर रहा, वरन् उनके विषय में कह रहा हूँ जिन्हें संसदीय लोकतन्त्र में कोई संघर्ष नहीं है। वास्तव में, मैं यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि संसदीय लोकतन्त्र के विचार एवं पूर्ण व्यक्तिगत स्वामित्व में संघर्ष बढ़ने जा रहा है।' फलतः उन्होंने कहा कि देश के आर्थिक विकास के लिए, तथा व्यक्ति के विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि राजनीतिक लोकतन्त्र के दायरे के भीतर ऐसी योजना तैयार की जाये जो समाज के सभी सदस्यों को आर्थिक न्याय उपलब्ध करा सके। यदि कोई देश ऐसा नहीं करता तो उसे किसी दूसरे आर्थिक और सामाजिक ढाँचे के अधीन होना पड़ेगा जिसे चाहे हम पसन्द करें अथवा नहीं। यह भी आवश्यक नहीं हैकि वह सामाजिक और आर्थिक ढाँचा लोकतन्त्र ही हो। इतिहास साक्षी है कि लोकतन्त्र की असफलता के मुख्य कारणों में उसकी आर्थिक कार्यक्रमहीनता अग्रणी रही है। नेहरू जी ने कहा है–'जब हम राजनीतिक लोकतन्त्र का उल्लेख करते हैं, तो हमें ध्यान रखना चाहिए कि उसका आगे कोई विशिष्ट महत्त्व नहीं

होगा, उदाहरणार्थ, जैसा महत्त्व उसे 19वीं शताब्दी में प्राप्त था। यदि उसे सार्थक होना है तो राजनीतिक लोकतन्त्र को धीरे–धीरे अथवा शीघ्रता से आर्थिक लोकतन्त्र का मार्ग दर्शाना चाहिए। यदि देश में आर्थिक असमानता विद्यमान है तो विश्व के समस्त राजनीतिक लोकतन्त्र और वयस्क मताधिकार वास्तविक लोकतन्त्र की स्थापना नहीं कर सकते।'

नेहरू जी ने अपनी अवधारणा के लोकतन्त्र की प्राप्ति के लिए अहिंसा के साधनों की वकालत की। उनका यह विचार गांधी जी की इस उक्ति पर आधारित था कि 'हिंसा को हिंसा के द्वारा कुचला नहीं जा सकता, इससे तो नूतन हिंसा का उदय होता है। हिंसा को केवल अहिंसा के द्वारा ही जीता जा सकता है।' अहिंसक साधनों के प्रयोग को लोकतन्त्र के लिए आवश्यक बताते हुए नेहरू जी ने कहा है, 'मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि हम अपने आदर्शों और उद्देश्यों को, चाहे वे कितने ही उच्च हों, हिंसक तरीकों से प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे तो हम इस विषय में अधिक विलम्ब करेंगे और उन बुराइयों के विकास में सहायक होंगे जिनसे हम जूझ रहे हैं–शान्तिपूर्ण विकास का तरीका ही अन्त में लोकतान्त्रिक विकास का तरीका है।' नेहरू जी का विश्वास था कि यदि लोकतन्त्र में बहुसंख्यक अपने बहुमत के आधार पर अल्पसंख्यकों के प्रति असहिष्णुता बरतते हैं तो वह निरंकुशतन्त्र से भिन्न नहीं हैं। लोकतन्त्र का आशय केवल बहुसंख्यकों का विकास मात्र नहीं है, उसकी परिधि में अल्पसंख्यकों का विकास भी शामिल है। नेहरू जी न केवल लोकतन्त्र को राजनीतिक एवं आर्थिक आधार प्रदान करना चाहते थे, वह उसे मानसिक चेतना पर भी आधारित करना चाहते थे। बन्धुत्व की भावना को आत्मसात् किये बिना कोई भी समाज, चाहे उसने राजनीतिक लोकतन्त्र को भले ही अपना लिया हो, अपने को लोकतान्त्रिक कहलाने का दावा नहीं कर सकता। बन्धुत्व की भावना को आधार बनाये बिना निर्मित लोकतन्त्र का आर्थिक है, परन्तु यह बहुत कुछ मानसिक भी है, जैसी कि प्रत्येक वस्तु अन्ततोगत्वा मस्तिष्क की उपज होती है। यह अवसर की समानता को सब व्यक्तियों से सम्बद्ध करता है, जहाँ तक कि राजनीतिक और आर्थिक कार्यक्रम में ऐसा करना सम्भव हो पाता है। यह व्यक्ति–स्वातन्त्रय के साथ सामर्थ्य और योग्यतानुसार उच्च विकास को मिश्रित करता है। यह निश्चित सहनशीलता को, जबकि दूसरों के मत तुम से भिन्न भी हों, उन्हें स्वीकार करने की प्रवृत्ति को जन्म देता है।'

निष्कर्ष:

नेहरू जी का विश्वास था कि 'लोकतन्त्र की स्थापना प्रचुर व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के लिए होती।' तथा उस स्वतन्त्रता की स्थापना के लिए वह व्यक्तियों के बीच किसी भी प्रकार के भेदभाव को स्वीकार नहीं करता। लोकतन्त्र तो समानता को स्वतन्त्रता को पोषक मानता है, लेकिन 'लोकतन्त्र यह नहीं कहता कि यथार्थ में सब व्यक्ति बराबर हैं। वह ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि यह काफी स्पष्ट है कि असमानता होती है। परन्तु सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को, शासन, सभा अथवा संसद के लिए प्रतिनिधियों के चुनाव में एक वोट मिलना चाहिए–इसलिए लोकतन्त्र की मुख्य माँगों में से एक वोट का अधिकार है।' किन्तु यह समानता केवल मताधिकार तक सीमित नहीं है। नेहरू जी के ही शब्दों में, 'लोकतन्त्र का यदि कोई अर्थ होता है तो वह समानता है, न केवल मताधिकार की समानता, वरन् आर्थिक और सामाजिक समानता।' गांधीजी जवाहरलाल नेहरू को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर कांग्रेस की बागडोर उनके हाथों में देते हुये भारत के भविष्य की सुरक्षा के प्रति पूर्णतया आश्वस्त रहे। कोटि–कोटि जनता के प्रेरणा–स्त्रोत नेहरू ने स्वंय गांधीजी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, स्वामी रामकृष्ण तथा स्वामी विवेकानन्द जैसे सन्तों से प्रेरणा प्राप्त की।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. कार्लोस पी रोमुलाऊ क–टेम्पोरेरी नेशनालिजम एण्ड वर्ल्ड आर्डर, (बोम्बे, 1964, 29–31 ।
2. जे॰ डब्ल्यू, बर्टन, इण्टरनेशलन रिलेशन्स ए जनरल थ्योरी (लन्दन, 1965) 230–31।
3. के॰ वी मिश्रा और ए॰ के॰ दामोदरन (एण्ड) डायनामिक्स आफ नान एलाइनमेनट, देहली 1983।
4. के॰ पी॰ मिश्रा एण्ड स्टडीज इन इण्डियन फोरिन पोलिसी, 104।
5. काटस आफ जवाहर लाल नेहरु–मंत्रिमण्डल सचिवालय, जवाहर लाल नेहरु जन्म शताब्दी कार्यान्वयन समिति, पृष्ठ–55।
6. वी॰ के॰ आर॰ वी॰ राव 'दि नेहरु लीगेसी पृ॰–60, इण्डियन सोशलिजम।
7. जगजीवन राय का अध्यक्षीय भाषण, एफ्रो ऐशियन कन्वेन्शन ऑफ नेहरु पृ॰ 213।
8. दास, एम॰एन॰ : दा पालिटिकल फिलासफी ऑफ नेहरु, अनविन लन्दन, 1988 ।
9. डीसेथी, नार्मन (सम्पादित) नेहरु दा फर्स्ट सिक्सटी इयर्स, एशिा पब्लिशिंग हाउस, बम्बई 1955
10. घोष शंकर : सोशियलिज्म एण्ड कम्यूनिज्म इन इण्डिया, एलाइट, बम्बई, 1971 ।